कृषि विज्ञान केन्द्र, बड़वानी

परिस्थितियों का अवलोकन कर फसलवार अनुशंसाऐं

कपास

1. बीटी कपास में बुवाई बीजउपचार के पश्चात् उचित समय (मई अंतिम सप्ताह से 15 जून तक) पर करें।
2. जी.ई.ए.सी. (बीटी कपास प्रजातियों की अनुमति प्रदान करने वाली भारत सरकार की समिति) की अनुशंसा के अनुसार पॉच कतारें बिना बीटी कपास वाले बीज की खेत के चारों ओर लगाना अति आवश्यक है इसे रिफ्यूजिया लाइन कहते है।
3. सभी कृषक बंधुओ को अपने खेतों से 22 सेमी की गहराई से मृदा नमूना लेकर परीक्षण प्रयोगशाला में मिट्टी की जॉच अवश्य करायें। ताकि उर्वरको का संतुलित मात्रा मे प्रयोग किया जा सके। पोषक तत्वों के अंतर्गत नत्रजन 60 किग्रा, फास्फोरस 30–40 किग्रा तथा पोटाश 30–40 किग्रा मात्रा प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें। इसके अलावा सल्फर, जिंक सल्फेट तथा मैग्नीशियम सल्फेट (मृदा परीक्षण के आधार पर आवश्यकतानुसार) 10 किग्रा प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें। फास्फोरस, पोटाश तथा जिंक की पूरी मात्रा का प्रयोग बुवाई के समय करें।
4. नत्रजन का तीन बराबर भागों में बांटकर प्रथम मात्रा बोते समय तथा दूसरा एवं तीसरा भाग 30–35 दिन के अंतराल पर करें इस बात का विशेष ध्यान रखें कि उर्वरक की संपूर्ण मात्रा का प्रयोग बुवाई के पश्चात् 80 दिनों के भीतर करें। किसान भाई पोटाश के प्रयोग के बारे में विशेष सावधानी बरतें, पोटाश का प्रयोग अवश्य करें।
5. किसान भाइयों को कीटनाशकों के प्रयोग के संबंध में सलाह दी जाती है कि बुवाई के 35–40 दिन तक रसचूसक कीट नियंत्रण के लिये अधिक शक्ति वाली दवा इमीडाक्लोप्रिड का प्रयोग न करें बल्कि कम शक्ति वाले जैविक उत्पाद जैसे नीम तेल का प्रयोग करें।
6. खरपतवार नियंत्रण कि लिये कोल्पा चलाकर प्रारंभिक 8–9 सप्ताह तक खेत को साफ रखना चाहिए।
7. समन्वित कीट नियंत्रण के अंतर्गत सितंबर के मध्य तक नीम के तेल का 5 प्रतिशत घोल का छिड़काव + क्रायसोपर्ला कीट के 10000 अण्डे प्रति हे. के हिसाब से फसल पर छोड़े + पक्षी आश्रय के लिये 20–20 फीट की दूरी पर बर्ड पर्चस या T आकार की खूंटियॉ को लगाना है।
8. मिलीबग के समन्वित कीट नियंत्रण हेतु 5 ग्राम हींग 2 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। रासायनिक नियंत्रण के अंतर्गत प्रोफेनोफॉस 2–2.5 मिली./ली. के हिसाब से छिड़काव करें।
9. मिट्टी परीक्षण के आधार पर यदि कार्वनिक पदार्थों की मात्रा 0.5 प्रतिशत से कम हो तो सना, ढेंचा, लोबिया का हरी खाद के रूप में प्रयोग करें तथा रोटावेटर चलाकर अच्छी तरह मिलाऐं ताकि मृदा संरचना में सुधार हो सके।